रिकॉर्ड :– ना वो हमसे जुदा होंगे..... ओम् शान्ति 23/11/1966
शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा मीठे–2 बच्चों को रूहानी ज्ञान और गुह्य–2 राज़ समझाय रहे हैं। एक तो बच्चों ने गीत सुना, बाबा हम आपके ऊपर बलिहार जावेंगे। भल कितने भी सितम सहन करने पड़े। सितम क्यों होते हैं? क्योंकि उनको ज़हर नहीं मिलता है। यह भी बच्चे जानते हैं कि हम ना ही आत्मा को जानते, ना ही परमात्मा को जानते थे। ना ही अपनी आत्मा को जानते थे, ना ही अपने बाप परमात्मा को जानते थे। इसलिए बिल्कुल ही बंदर बुद्धि थे। लौकिक संबंधियों में तो अपने को भी जानते हैं, बाप को भी जानते हैं। जनावर भी अपने को, बाप को जानते हैं। माँ–बाप भी जानते हैं कि यह हमारे बच्चे हैं। मगर इस समय के मनुष्य अपने को और पारलौकिक बाप को नहीं जानते हैं। बन्दर मिसल हैं। कितने बड़े–2 साधु–संत–महात्मा श्री–श्री 108 जगत्गुरु भी शंकराचार्य आदि हैं। बाप समझाते हैं कि वो बेचारा शंकराचार्य ना तो अपनी आत्मा को, ना ही अपने परमपिता बाप को ही जानते हैं। वो तो कह देते हैं कि परमात्मा को तो कोई नाम–रूप ही नहीं है। देश–काल नहीं है। तो फिर तो आत्मा का भी नहीं होना चाहिए। आत्मा को भी वो लोग जानते नहीं हैं। कह देते, आत्मा सो परमात्मा। अब तुमने जाना है। वो तो सिर्फ नाम मात्र ही कह देते हैं आत्मा और जगह है। आत्मा अविनाशी है, देह विनाशी है। अच्छा, आत्मा क्या चीज़ है, आत्मा का रंग–रूप क्या है? ना... तो जानते हैं आत्मा है। क्या करती है, क्या–2 पार्ट बजाती है, कितना समय पार्ट बजाती है। इस आत्मा की नॉलेज का कोई वर्णन कर नहीं सकता है। अब तुम जानते हो कि आत्मा तो छोटा–सा सितारा है। आत्मा में ही सारा 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। शंकराचार्य की आत्मा अपना पार्ट बजा रही है। इससे पहले ज़रूर कोई और होगा, जो फिर पीछे गुरु का जाकर चेला बना है। पहले–2 तो कोई गृहस्थियों के पास ही जन्म लेते होंगे। विकार बिना तो जन्म ले ही नहीं सकते हैं। सन्यासी यह थोड़े ही समझते हैं कि विकार से जन्म लिया है। इसलिए हम भी भ्रष्टाचारी हैं। देवी–देवताएँ कब विकार से जन्म नहीं लेते हैं। यह भी किसी को पता नहीं है कि आत्मा कैसे पहले–2 सतोप्रधान, फिर सतो–रजो–तमो में आती है। सिर्फ कहते हैं कि भृकुटि के बीच चमकता ..... और कुछ भी नहीं जानते हैं। आत्मा को नहीं जाना तो माना कि परमात्मा को भी नहीं जाना। इस समय यह है ही काँटों का जंगल। सब ही काँटे हैं। ना ही रचता परमपिता को जानते हैं, ना ही रचना के आदि–मध्य–अंत को ही जानते हैं। तुम अब आत्मा और परमात्मा को जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बहुत बच्चे हैं जो कि आत्मा को अब तक भी अच्छी रीति नहीं जानते हैं। देह–अभिमान में रहने के कारण पूरी धारणा नहीं हो पाती है। पत्थरबुद्धि हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं ना! बाबा, ऐसा क्यों है? बाप समझाते हैं कि बच्चे, यह राजधानी स्थापन हो रही है ना। उसमें अनेक तरह के चाहिए ना। ज़रूर पत्थरबुद्धि हो तब तो... कम पद पावेंगे ना। अगर जानते हो तो औरों को समझावें। तुम कहेंगे कि आगे चलकर समझाने लग पड़ेंगे फिर। मगर ऐसे तो ज़रूर ही होंगे तब तो कम पद पावेंगे ना। कहाँ राजा, कहाँ प्रजा। कितना फर्क है! यहाँ तो राजा को भी दुख है तो नौकरों को भी दुख–रोग है। सतयुग में ना राजा और ना ही प्रजा को दुख होता है। मगर पद में तो बहुत ही फर्क है ना! पूरी धारणा ना होने से समझाये नहीं सकते हैं। फिर कोई ना कोई काँटा लगाते रहते हैं। या लोभ या मोह कुछ ना कुछ मतलब तो कि भूत की प्रवेशता होगी। यह भी नहीं होना चाहिए। तुम बच्चों में से कई जाकर शंकराचार्य आदि को भी समझावेंगे। यह साधु लोग आदि सब (कौरव सम्प्रदाय) है। तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय। भीष्म–द्रोणाचार्य आदि सब ही हैं साधुओं के नाम। तुम तो हो प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। प्रजापिता ब्रह्मा का बाप कौन? शिव। शिव का बाप तो कोई होता ही नहीं। यह सारी रचना उस बाप की ही है। भाई–2 हैं। ब्र०वि०शं० सब बाप की रचना है। तो सब हो गईं आत्माएँ। परमपिता परमात्मा एक ही है। यहाँ ब्र०वि०शं० से कोई को गति–सद्गति का वर्सा मिल ही नहीं सकता है। इसी कारण कोई गुरु भी हो नहीं सकता है। इतने सब तो जगत गुरु कहलाने वाले हैं वो सब हैं ही भक्तिमार्ग के। वो बिचारे ना तो आत्मा को, ना ही परमात्मा को ही जानते हैं। एक परमपिता परमात्मा ही आत्मा को रियलाइज़ कराय सकता है। शंकराचार्य को बड़े ते बड़ा विद्वान कहेंगे; परन्तु आत्मा और परमात्मा को तो जानते ही नहीं हैं। आजकल पढ़ाई करके टाइटिल ले लेते हैं। इनके चेले जो होते हैं गुरुओं से सीखते हैं, फिर उनकी गद्दी ले लेते हैं। फिर उनको भी श्री–श्री 108 जगतगुरु कह देते हैं। इसने कोई पढ़ाई करके टाइटिल नहीं लिया है। पढ़ाई पढ़ने से जगतगुरु का टाइटिल मिल जाता है। उनके पास कोई ज्ञान तो है नहीं। ज्ञान

से तो सद्गति होती है। ज्ञान तो एक ही बाप देते हैं। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है यह तो जाना(जानना) चाहिए ना। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोई फिर शिवबाबा की स्थूल सर्विस भी करते हैं ना। उनको भी तो मार्क्स तो मिलते ही हैं ना। भण्डारे में सेवा करते हैं। ब्राह्मण तो हैं ना। अब तुम बच्चों को यह अमरकथा सु(नाई) है। यह है ही रूहानी ज्ञान। अपने को और बाप को जाना है। वो तो कह देते हैं कि हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। बस, बुदबुदा पानी में से निकल फिर समा जाता है। हम भी ब्रह्म से निकले हैं फिर ब्रह्म में ही लीन हो जाना है या कि हम तो ब्रह्म बन जाते हैं। और कोई ज्ञान रचता और रचना का है ही नहीं। वो तो अब बाप ही आकर तुमको समझाते हैं। उनका नाम है शिव। फिर उनको कोई रुद्र भी कहते हैं, कोई कटेश्वर कहते। अनेकों ही नाम रख दिए हैं। पूजा के लिए सामग्री तो बहुत ही चाहिए ना। जो–2 काम करते हैं उस पर ही नाम रख दिया है और फिर बहुत ढेर मंदिर बनाए दिए हैं। तो बाप समझाय रहे हैं कि (काँटों) की दुनिया वैश्यालय। सन्यासी आदि सब ही पतित दुनिया में ही हैं। वो तो स्वर्ग में जाए नहीं सकते हैं। स्वर्ग को तो वो जानते ही नहीं हैं। उनकी बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। वह समझेंगे कि बाप है। यह सबसे लिखाया जाता है कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। वो बाप है जो आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तो सारी सृष्टि कब स्वर्ग हो जाती है। यह भी किसी की बुद्धि में नहीं आता है। ज़रा भी नहीं जानते हैं। बहुत ही साधु हो गए हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान तो हर प्रकार का होता है ना। वाढे को वाढे के काम का ज्ञान। कुली को कुली पने का ज्ञान। सबको अपना–2 ज्ञान है। यह तो है ही रूहानी ज्ञान जो कि एक भगवान ही आकर देते हैं। मनुष्यों को तो भगवान का भी पता नहीं है। गीता का भगवान क्या आचार्य हुआ? भगवान किसको कहा जाता है? मुख्य बात है ही गीता को ही खण्डन कर दिया है तो बाकी सब शास्त्र भी झूठे हो गए। झूठे पत्थरों की भी खान होती है ना। तो इन्होंने भी सब ही (झूठ) लिख दिया है। पारस बुद्धि रहते ही स्वर्ग में। यह तो है ही नर्क। बुलाते भी हैं– हे पतित–पावन आओ। ज़रूर पतित हैं। नर्क और स्वर्ग भारत में ही कहते हैं; क्योंकि मरते हैं तो कहते हैं कि स्वर्ग में गया। यह बुद्धि में नहीं आता कि स्वर्ग को नई (दुनिया) सतयुग को कहा जाता है। भगवान स्वर्ग करते हैं, ना कि नर्क। रावण राज्य कब से शुरू होता है यह भी कोई को पता नहीं है। भल सतोप्रधान हैं। ब्रह्मपुरी भी रहती है। मगर पैदा तो विकार से ही होते हैं ना। साधु–संत आदि भी साधना करते हैं। बाप से मुक्ति माँगते हैं। छी–2 दुनिया में रहना नहीं चाहते; इसलिए ही साधना करते हैं ईश्वर की। उनको कोई भगवान ज्ञान नहीं देते हैं। ज्ञान तो इन्हों को मिलती (ही) नहीं है। वो सब हैं ही कलियुगी गुरु भक्तिमार्ग के। शास्त्र पढ़कर सुनाते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं कि पहले–2 तो आत्मा का ज्ञान बैठ समझाना है कि वो कैसे जन्म–मरण में आती है, कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाती है। सबसे जास्ती पार्ट तुम्हारा है इसलिए तुमको ही बाप समझाते हैं। जो देवी–देवताएँ थे वो ही पूरे जन्म लेते हैं। ल०ना० ने राज्य किया, फिर कहाँ गए, यह किसी को भी पता नहीं है। उनकी आत्मा ने जन्म तो लिए ही होंगे ना। अब वो कहाँ हैं? क्राइस्ट लोग भी जानते हैं कि वो इस समय बैगरी पार्ट में होगा। तुम तो अब उसको पूरा–2 जानते हो। ल०ना० जो स्वर्ग के मालिक थे, सुनते हैं फिर उनको 84 जन्म पूरे करने हैं। सब तो नहीं 84 जन्म लेंगे ना। यह भी ज्ञान बुद्धि में धारणा करने का है। योग में रहने के बिना सतोप्रधान बन नहीं सकते हैं। योग से ही विकर्म विनाश होंगे और फुल सतोप्रधान बनेंगे। जब तक यहाँ हैं तब तक कुछ ना कुछ काँटे लगते ही रहते हैं। फुल ज्ञान आ जाने पर तुम यहाँ पर रह नहीं सकेंगे। (अब) तुम सब काँटों के जंगल में अथवा कहें कि रावण राज्य में हैं। वो सबको काँटों को फूल बनाते हैं। वो ही जाकर राजाई पद पाते हैं। एक फूल होता है उसको किंग ऑफ फ्लावर कहा जाता है। बहुत सुन्दर होता है। .... पर रख देते हैं। फिर जैसे–2 खुलता जावेगा वैसे–2 खुशबू फैलती ही जाती है। ऐसा फूल और कोई होता नहीं है। अब फूल है किंग तो क्वीन भी ज़रूर होगी। वो भी ऐसा ही फूल होगा। फ्लावर शो दिखाते हैं ना। .... सब अच्छे–2 फूल ले आते हैं। जो अच्छे–2 फूल लाते हैं उनको फिर इनाम मिलता है। तुम भी फूलों का बगीचा बनते हो। शिव पर फूल चढ़ाते हैं। उसमें रत्नज्योत–अक का भी फूल चढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है कि मैं

तुमको फूल बनाने यहाँ पार्ट बजाता हूँ। मैं जानता हूँ कि कौन फर्स्ट क्लास क्वालिटी का फूल है। कौन ..... के हैं, कौन अक हैं। सबसे छी–2 होता ही है अक का। उनकी चाल से ही सिद्ध होता है कि कोई में ..... क्रोध होता है। क्रोध भी एक भूत है ना। बहुतों को ही दुख देते हैं। अब तुम कंसों की दुनिया के ..... हो। तुम अब संगमयुग पर हो। अब सब काँटों से फूल बन रहे हैं। जैसे माली फूलों को अलग ..... है ना। तुमको भी पार्ट से अलग कर दिया है। तुम अब संगमयुग में हो। फिर भी माया काँटा ..... फिर भी एक बार हमारे बन तो गए ना। फिर भी माया के तूफान भी से एक/दो का खत्म ..... बाकी जो यह पाट में फूल लगाए हुए हैं। हरे हो जाने पर फिर स्वर्ग रूपी बाग में लगा..... हो जावेगा। तुम कितने थोड़े फूल हो। तुमको संगमयुग रूपी पाट में (डाला) हुआ है। बीज..... का तूफान लगता है तो मुरझाया जाता है। फिर भी उनमें ज्ञान का बीच एक बार पड़ गया .... नहीं होता है। बाप बैठे बच्चों को समझाते हैं कि तुम प्रदर्शनी में शंकराचार्य का भी चित्र लगा सकते ..... के चित्र लगाने चाहिए। बाकी भी तो सबका नेहरू आदि का लगाया है ना। तुम सिद्ध करके बता सकते हो ..... श्री–श्री 108 जगत गुरु ना तो आत्मा को जानते हैं, ना ही परमात्मा को ही जानते हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं है। बहुत ही निडर बनना है। डर के मारे प्रदर्शनी में बच्चे कोर्ट ऑफ आर्म्स का चित्र नहीं रखते हैं। यह तो सारे गीता के अक्षर हैं ना। डरना क्यों चाहिए। कोई किताब या शास्त्र में यह भी है कि कृष्ण को जेल में डाला। अब शिवबाबा को तो कुछ कर कह नहीं सकता है। बिगड़ेंगे भी तो क्या करेंगे। तुम कहते हो कि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको समझाते हैं। समझो कि यह जेल में गया। जो अनन्य बच्चे होंगे वो समझेंगे कि कोई नई बात नहीं है, 5000 साल पहले भी गए होंगे। ज्ञान की पराकाष्ठा नहीं है तो मूँझेंगे। वो लोग बापदादा को जानते ही नहीं हैं। तो जैसे औरंगजेब ने भी अपने भाइयों आदि बाप को जेल में डाल दिया। यह भी ऐसे ही बाप को जेल में डाल देंगे। बाबा यह एक मिसाल देते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि हर चित्र पर ..... भी लिख दो कि 5000 साल पहले भी ऐसे ही यह प्रदर्शनी देखी थी। यह तो ज़रूर ही लिखना है। यह लड़ाई हर 5000 साल बाद ऐसे ही हमेशा लगती है, पुरानी दुनिया को स्वर्ग बनाने के लिए। बाबा युक्तियाँ तो बहुत ही, समझानियाँ तो बहुत ही सुनाते हैं। बाप को याद करो और स्वर्ग को याद करो। मनुष्य तो पानी में ही टुबके मारते रहते हैं। सो भी सागर में जावें ना। नदियाँ सागर से निकलती हैं ना; परन्तु नदियाँ हैं मीठी, फिर भी नदियों का बाप तो सागर ही है ना। वहाँ जाकर स्नान करो। मगर वो खारा है। इसलिए ही मीठी नदियों में जाए कर स्नान करते हैं। अब तुम तो हो ही ज्ञान के सागर के बच्चे। ज्ञान का सागर, पतित–पावन बाप है। तुम हो उनके बच्चे। जो जितनी ही जास्ती सर्विस करेंगे तो समझा जावेगा कि यह बहुत ही अच्छा फूल है। प्रदर्शनी में भी घड़ी–2 अच्छे–2 को ही बुलाते हैं। समझते हैं कि फलाने हमसे होशियार हैं। बुलाते हैं तो फिर रिगार्ड भी रखना ही चाहिए। बाबा बहुत ही समझाते हैं कि कब भी क्रोध नहीं करो। कोई से समझो .... क्रोध जास्ती करता है। तो बाबा कहते हैं कि समझ जाओ कि उसके अन्दर भूत है। माँ–बाप पर भी कब क्रोध करने में देरी नहीं करेंगे। और ही वृद्धि को पाए लेंगे। नौकरों–चाकरों पर कब क्रोध नहीं करना चाहिए। बाप तो आया ही है गरीबों को साहुकार बनाने के लिए। यहाँ जो भी ऊँचे पद पर हैं वो ही वहाँ जाकर ऊँच पद को पावेंगे। जो फिर गरीब ही आ करके पढ़ाई अच्छी रीति पढ़ेंगे वो ही जाकर साहुकार बनेंगे। ऐसे भी सेन्टर्स पर आते हैं जो कि कब भी 6–8 रुपये भी कब नहीं देते होंगे। समझते ही नहीं हैं कि बीज बोने से ...हमारा बहुत ही बनेगा। सुदामा का मिसाल है ना। ईश्वर के अर्थ दान करते हैं ना। समझते हैं कि दूसरे जन्म में जा करके फल मिलेगा। बाबा ने बताया था कि कोई ने बाबा को एक रुपया भी दे दिया था कि बाबा, हमारी एक ईंट लगवाए देना। बाबा ने रेस्पॉन किया कि बच्ची, मैंने यहाँ ईंट लगाई है मगर मैं बदले में तुमको महल दूँगा। इसलिए यहाँ जो दान देते हैं वो ही वहाँ जाकर श्री बन जाते हैं। मंदिर में जाते हैं तो गरीब लोग तो मूली भी जाकर चढ़ाते हैं। अब यहाँ तो कोई मूली तो नहीं देगा ना। यहाँ तो बाप दाता है ....। बाप को 8 आने भी भेजते हैं। एक बार तो एक ने एक पैसा भी भेजा था मनीऑर्डर करके। वण्डर है ना! दुनिया में तो गरीब बहुत है। सतयुग में ऐसा नहीं होता है। ओम् शांति।